क. संदेशवाहक को ठुकराना

- प्रतिज्ञा किए हुए देश के द्वार पर उसकी खोजबीन करने के लिए भेदिए भेजे गए। उनकी रिपोर्ट में कहा गया कि देश वैसा ही अच्छा था, जैसा परमेश्वर ने बताया था (गिनती 13:27)। लेकिन इसके साथ एक निराशाजनक संदेश भी जोड़ दिया गया (गिनती 13:28, 31)। तब परमेश्वर ने कालेब के माध्यम से उन्हें उस देश पर अधिकार करने के लिए प्रोत्साहित किया (गिनती 13:30)
- रात भर विचार करने के बाद लोगों ने एक निर्णय लिया: उन्होंने परमेश्वर के उन संदेशवाहकों को ठुकराने का फैसला किया, जो अब तक उनकी अगुआई कर रहे थे (गिनती 14:1-4)। जब यहोशू और कालेब ने उन्हें फिर से प्रोत्साहन के वचन सुनाए, तो उन्होंने उन पर पत्थरवाह करने का निर्णय लिया (गिनती 14:6-10)
- इसके बाद भी कई अन्य संदेशवाहकों को ठुकराया गया (2 इतिहास 25:15-16; आमोस 7:10-13)
- उन्हें ठुकराने का कारण क्या था? परमेश्वर की ओर से लाया गया संदेश उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं था, और न ही वे अपने पापमय जीवन को छोड़ना चाहते थे

ख. संदेश को ठुकराना

- **तिरस्कार**
  - राजा यहोयाकीम के समय में लोग गंभीर पापों में लिप्त थे। परमेश्वर ने यिर्मयाह को आज्ञा दी कि वह भविष्यवाणी के संदेश को एक पुस्तक में लिखे, ताकि राजा और उसके सलाहकारों को चेतावनी दी जा सके और वे अपने बुरे मार्गों से फिर जाएँ (यिर्मयाह 36:1-3)
  - लेकिन यहोयाकीम ने उस संदेश का तिरस्कार किया और उसे आग में डालकर नष्ट कर दिया, जबकि कुछ लोगों ने उससे ऐसा न करने की विनती की थी (यिर्मयाह 36:21-25)
  - इसके उत्तर में यहोयाकीम के विरुद्ध एक कठोर भविष्यवाणी सुनाई गई, और नष्ट किए गए संदेश को फिर से लिखकर उसमें और बातें जोड़ दी गईं (यिर्मयाह 36:27-31)
  - हम सोच सकते हैं कि यदि हम बाइबल नहीं पढ़ेंगे, तो हम जो चाहें कर सकते हैं और शांति से जीवन बिता सकते हैं। लेकिन यदि हम परमेश्वर की चेतावनियों को अनदेखा करते हैं, तो हमें अपने पापों और दुष्टता के परिणाम भुगतने पड़ेंगे।
- **हठधर्मिता**
  - यहूदा के अंतिम राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के प्रति निष्ठा की शपथ खाई थी, लेकिन उसने अपनी वाचा तोड़ दी। उसने यिर्मयाह के माध्यम से परमेश्वर द्वारा दिए गए चेतावनी के संदेशों को बार-बार मानने से इनकार किया (2 इतिहास 36:12)
  - जब बाबुल की सेना ने यरूशलेम को घेर लिया, तो सिदकिय्याह ने यिर्मयाह को बुलाकर उससे परमेश्वर का संदेश पूछा (यिर्मयाह 38:14)
  - संदेश स्पष्ट था: बाबुल के सामने आत्मसमर्पण कर दो, तो तुम अपना जीवन और यरूशलेम को बचा लोगे (यिर्मयाह 38:17-23)। लेकिन सिदकिय्याह ने इस संदेश को ठुकरा दिया। उसकी हठ के कारण अंततः यरूशलेम का विनाश हुआ (2 इतिहास 36:13)
  - ग्यारह वर्षों तक परमेश्वर ने उसे आशा के संदेश दिए, ताकि वह पश्चात्ताप करके अपना आचरण बदल ले। कभी-कभी उसने सकारात्मक प्रतिक्रिया भी दी, लेकिन उसने स्थायी सुधार नहीं किए (यिर्मयाह 34:8-11)
- **कपट**
  - यीशु ने फरीसियों को कपटी क्यों कहा?
    (1) क्योंकि वे जिस बात का उपदेश देते थे, लेकिन स्वयं उसके अनुसार नहीं चलते थे (मत्ती 23:3)
    (2) क्योंकि वे दूसरों पर भारी बोझ डालते थे, लेकिन स्वयं उसे उठाना नहीं चाहते थे (मत्ती 23:4)
    (3) क्योंकि वे जो कुछ भी करते थे, वह केवल दूसरों को दिखाने के लिए करते थे (मत्ती 23:5)
    (4) क्योंकि वे सम्मान पाना पसंद करते थे, लेकिन दूसरों का सम्मान नहीं करते थे (मत्ती 23:6-7, 11-12)
    (5) क्योंकि वे भविष्यद्वक्ताओं की प्रशंसा करते थे, लेकिन उनके संदेशों का पालन नहीं करना चाहते थे (मत्ती 23:29-31)
    (6) क्योंकि वे परमेश्वर की सेवा करने का दावा करते थे, लेकिन जो लोग परमेश्वर की ओर से उनसे बात करते थे, वे उन्हें मार डालना चाहते थे (मत्ती 23:34)
  - कपटी फरीसियों के विरुद्ध यीशु के वचन इसलिए लिखे गए, ताकि हम उनके उदाहरण पर चलने से बचें और ऐसे किसी भी रवैये या विचार को त्याग दें, जो हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए संदेश को ठुकराने की ओर ले जाता है।

ग. व्यावहारिक उपयोग

- "जो लोग अतीत को याद नहीं रख सकते, वे उसे दोहराने के लिए अभिशप्त हैं" (जॉर्ज सैंटायाना)
- परमेश्वर के साथ मानवता के अनुभव–चाहे वे अच्छे हों या बुरे–अनदेखे नहीं किए जाने चाहिए और न ही उन्हें महत्वहीन समझना चाहिए
- यदि हम पवित्रशास्त्र की चेतावनियों और परमेश्वर द्वारा अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से भेजे गए संदेशों पर ध्यान दें, तो हम पिछली पीढ़ियों की गलतियों को दोहराने के लिए अभिशप्त नहीं हैं (1 कुरिन्थियों 10:11)

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट के दर्शन

एलेन जी. व्हाइट को सार्वजनिक रूप से जो दर्शन प्राप्त होते थे, उनके साथ असाधारण घटनाएँ घटती थीं: वह साँस नहीं लेती थीं; उनकी आँखें खुली रहती थीं; उन्हें अपने आसपास हो रही घटनाओं का बिल्कुल भी पता नहीं होता था; ...

हालाँकि कुछ लोगों ने उन पर स्वयं को सम्मोहित करने (मेस्मेरिज़्म) का आरोप लगाया, लेकिन वह इस बात को नियंत्रित नहीं करती थीं कि उन्हें दर्शन कब प्राप्त होगा या वह उससे कब बाहर आएँगी

जब एलेन दर्शन में चली जाती थीं, तो जेम्स व्हाइट वहाँ उपस्थित लोगों को उन्हें जाँचने के लिए आमंत्रित करते थे, ताकि उनके विरोधियों के मन में उनके अलौकिक अनुभव के स्रोत को लेकर कोई संदेह न रहे और उन लोगों का विश्वास मजबूत हो, जो उन पर विश्वास करते थे

जिन लोगों ने उन पर सम्मोहित करने (मेस्मेरिज़्म) का आरोप लगाया था, वे यह देखकर चकित रह गए कि वह वास्तव में साँस नहीं ले रही थीं। वे भयभीत होकर उस स्थान से भाग गए, जहाँ दर्शन हो रहा था।